अध्याय १७

श्री चैतन्य महाप्रभु के शारीरिक विकार

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत प्रवाह भाष्य* में इस अध्याय का जो सारांश दिया है, वह इस प्रकार है। श्री चैतन्य महाप्रभु दिव्य भाव में मग्न होने के कारण एक रात को अपने कमरे के दरवाजे को खोले बिना बाहर चले गये। तीन दीवालें लाँघने के बाद वे तैलंग जिले की कुछ गायों के बीच जा गिरे। वहाँ वे कछुए के भाव में अचेत पड़े रहे।

लिख्यते श्रील-गौरेन्दोरत्यद्भुतमलौकिकम् ।
यैर्दृष्टं तन्मुखाच्छ्रुत्वा दिव्योन्माद-विचेष्टितम् ॥ १ ॥

लिख्यते—वे लिखे जा रहे हैं; **श्रील**—सर्वाधिक ऐश्वर्यशाली; **गौर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **इन्दोः**—चन्द्रमा समान; **अति**—अत्यन्त; **अद्भुतम्**—अद्भुत; **अलौकिकम्**—असामान्य; **यैः**—जिसके द्वारा; **दृष्टम्**—स्वयं देखा; **तत्-मुखात्**—उनके मुख से; **श्रुत्वा**—सुनने के बाद; **दिव्य-उन्माद**—दिव्य उन्माद में; **विचेष्टितम्**—कार्यों को।

अनुवाद

मैं भगवान् गौरचन्द्र की दिव्य लीलाओं तथा आध्यात्मिक उन्माद के विषय में लिखने का प्रयास कर रहा हूँ, जो कि अत्यन्त अद्भुत तथा असामान्य हैं। मैं उनके विषय में लिखने का साहस इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि मैंने उनके मुखों से सुना है, जिन्होंने महाप्रभु के कार्यों को स्वयं देखा है।

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥२॥

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २ ॥

जय जय—जय जय; **श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—भगवान् नित्यानन्द की; **जय**—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—श्री चैतन्य महाप्रभु के सारे भक्तों की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैतचन्द्र की जय हो! महाप्रभु के सारे भक्तों की जय हो!

এই-মত মহাপ্রভু রাত্রি-দিবসে ।
উন্মাদের চেষ্টা, প্রলাপ করে প্রেমাবেশে ॥৩॥

এই-মত মহাপ্রভু রাত্রি-দিবসে ।
উন্মাদের চেষ্টা, প্রলাপ করে প্রেমাবেশে ॥ ३ ॥

এই-মত—इस तरह; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **रात्रि-दिवसे**—दिन-रात; **उन्मादेर**—उन्मत्त की तरह; **चेष्टा**—कार्य; **प्रलाप करे**—प्रलाप करते; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में।

अनुवाद

भावमग्न श्री चैतन्य महाप्रभु दिन-रात उन्मत्त की तरह कार्य करते और बोलते रहते।

এক-দিন প্রভু স্বরূপ-রামানন্দ-সঙ্গে ।
অর্ধ-রাত্রি গোঙাইলা কৃষ্ণ-কথা-রঙ্গে ॥৪॥

एक-दिन प्रभु स्वरूप-रामानन्द-सङ्गे ।
अर्ध-रात्रि गोङाइला कृष्ण-कथा-रङ्गे ॥ ४ ॥

एक-दिन—एक दिन; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **स्वरूप-रामानन्द-सङ्गे**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी और रामानन्द राय के साथ; **अर्ध-रात्रि**—आधी रात; **गोङाइला**—बिता दी; **कृष्ण-कथा**—कृष्ण लीलाओं की चर्चा के; **रङ्गे**—विषय में।

अनुवाद

एक बार स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रामानन्द राय के संग में श्री चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण लीलाओं के विषय में बातें करते-करते आधी रात बिता दी।

যবে যেই ভাব প্রভুর করয়ে উদয় ।
ভাবানুরূপ গীত গায় স্বরূপ-মহাশয় ॥৫॥

য়বে য়েই ভাব প্রভুর করয়ে উদয় ।
ভাবানুরূপ গীত গায় স্বরূপ-মহাশয় ॥৫॥

য়বে—जब भी; **য়েই**—कुछ भी; **ভাব**—भाव; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **করয়ে উদয়**—उठते; **ভাব-অনুরূপ**—दिव्य भावों के अनुरूप; **গীত**—गीत; **গায়**—गाते; **স্বরূপ**—स्वरूप दामोदर; **মহাশয়**—महात्मा।

अनुवाद

जब वे कृष्ण के विषय में बातें करते, तो स्वरूप दामोदर गोस्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु के दिव्य भावों के अनुरूप गीत गाया करते।

বিদ্যাপতি, চণ্ডীদাস, শ্রী-গীত-গোবিন্দ ।
ভাবানুরূপ শ্লোক পড়েন রায়-রামানন্দ ॥৬॥

বিদ্যাপতি, চণ্ডীদাস, শ্রী-গীত-গোবিন্দ ।
ভাবানুরূপ শ্লোক পড়েন রায়-রামানন্দ ॥৬॥

বিদ্যাপতি—विद्यापति लेखक; **চণ্ডীদাস**—चण्डीदास लेखक; **শ্রী-গীত-গোবিন্দ**—जयदेव गोस्वामी कृत प्रसिद्ध ग्रन्थ; **ভাব-অনুরূপ**—भाववेश के अनुसार; **শ্লোক**—श्लोक; **পড়েন**—पढ़ते; **রায়-রামানন্দ**—रामानन्द राय।

अनुवाद

रामानन्द राय विद्यापति तथा चण्डीदास की पुस्तकों से, और विशेष रूप से जयदेव गोस्वामी कृत 'गीतगोविन्द' से श्लोक उद्धृत करते, जो श्री चैतन्य महाप्रभु के भावों को बढ़ावा देते।

মধ্যে মধ্যে আপনে প্রভু শ্লোক পড়িয়া ।
শ্লোকের অর্থ করেন প্রভু বিলাপ করিয়া ॥৭॥

मध्ये मध्ये आपने प्रभु श्लोक पड़िया ।
श्लोकेर अर्थ करेन प्रभु विलाप करिया ॥ ७॥

मध्ये मध्ये—बीच बीच में; **आपने**—स्वयं ही; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **श्लोक**—श्लोक; **पड़िया**—पढ़कर; **श्लोकेर**—श्लोक की; **अर्थ**—व्याख्या; **करेन**—करते; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **विलाप करिया**—विलाप करते हुए।

अनुवाद

बीच बीच में श्री चैतन्य महाप्रभु भी कोई श्लोक पढ़ देते। तब वे शोक करते हुए इसकी व्याख्या करते।

এই-মতে নানা-ভাবে অর্ধ-রাত্রি হৈল ।
গোসাঞিরে শয়ন করাই' দুঁহে ঘরে গেল ॥৮॥

এই-মতে নানা-ভাবে অর্ধ-রাত্রি হৈল ।
গোসাঞিরে শয়ন করাই' দুঁহে ঘরে গেল ॥ ৮॥

এই-মতে—इस तरह; **নানা-ভাবে**—नाना प्रकार के भावों में; **অর্ধ-রাত্রি**—आधी रात; **হৈল**—बिता दी; **গোসাঞিরে**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **শয়ন করাই'**—उनके बिस्तर पर लिटाकर; **দুঁহে**—सब; **ঘরে গেল**—घर चले गये।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने नाना प्रकार के भावों का अनुभव करते करते आधी रात बिता दी। अन्त में, महाप्रभु को उनके बिस्तर पर लिटाकर स्वरूप दामोदर तथा रामानन्द राय दोनों अपने अपने घर चले गये।

গম্ভীরার দ্বারে গোবিন্দ করিলা শয়ন ।
সব-রাত্রি প্রভু করেন উচ্চ-সঙ্কীর্তন ॥৯॥

গম্ভীরার দ্বারে গোবিন্দ করিলা শয়ন ।
সব-রাত্রি প্রভু করেন উচ্চ-সঙ্কীর্তন ॥ ৯॥

গম্ভীরার—श्री चैतन्य महाप्रभु के कमरे; **দ্বারে**—के दरवाजे पर; **গোবিন্দ**—उनका निजी सेवक; **করিলা শয়ন**—लेट गया; **সব-রাত্রি**—रात भर; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **করেন**—करते रहे; **উচ্চ-সঙ্কীর্তন**—उच्च स्वर में कीर्तन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु का निजी सेवक गोविन्द उनके कमरे के दरवाजे पर लेट गया और महाप्रभु रात भर उच्च स्वर से हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन करते रहे।

आचम्बिते शुनेन प्रभु कृष्ण-वेणु-गान ।
भावावेशे प्रभु ताहाँ करिला प्रयाण ॥ १०॥

आचम्बिते शुनेन प्रभु कृष्ण-वेणु-गान ।
भावावेशे प्रभु ताहाँ करिला प्रयाण ॥ १०॥

आचम्बिते—सहसा; **शुनेन**—सुनाई; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कृष्ण-वेणु**—कृष्ण की वंशी; **गान**—ध्वनि; **भाव-आवेशे**—भावावेश में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताहाँ**—वहाँ; **करिला प्रयाण**—चले।

अनुवाद

सहसा श्री चैतन्य महाप्रभु को कृष्ण की वंशी की ध्वनि सुनाई पड़ी। अतः भावावेश में वे कृष्ण का दर्शन करने के लिए चल पड़े।

तिन-द्वारे कपाट ऐछे आछे त' लागिया ।
भावावेशे प्रभु गेला बाहिर हञा ॥ ११॥

तिन-द्वारे कपाट ऐछे आछे त' लागिया ।
भावावेशे प्रभु गेला बाहिर हञा ॥ ११॥

तिन-द्वारे—तीनों दरवाजे; **कपाट**—दरवाजे; **ऐछे**—पहले से; **आछे**—हैं; **त' लागिया**—बन्द; **भाव-आवेशे**—भावावेश में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **गेला**—गये; **बाहिर**—बाहर; **हञा**—होकर।

अनुवाद

तीनों दरवाजे हमेशा की तरह बन्द कर दिये गये थे, किन्तु फिर भी अति भावावेश में श्री चैतन्य महाप्रभु कमरे के बाहर निकल आये और घर को छोड़ दिया।

সিংহ-দ্বার-দক্ষিণে আছে তৈলঙ্গী-গাভী-গণ ।
তাহাঁ যাই' পড়িলা প্রভু হঞা অচেতন ॥ ১২ ॥

সিংহ-দ্বার-দক্ষিণে আছে তৈলঙ্গী-গাভী-গণ ।
তাহাঁ য়াই' পড়িলা প্রভু হঞা অচেতন ॥ ১২ ॥

सिंह-द्वार—सिंहद्वार नामक की द्वार पर; **दक्षिणे**—दक्षिण दिशा में; **आछे**—थे; **तैलङ्गी-गाभी-गण**—तैलंग जिले की गायें; **ताहाँ**—वहाँ; **य्राइ'**—जाकर; **पड़िला**—गिर पड़े; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हञा अचेतन**—अचेत होकर।

अनुवाद

वे सिंहद्वार की दक्षिणी ओर की गोशाला में गये और तैलंग जिले की गायों के बीच अचेत होकर गिर पड़े।

এথা গোবিন্দ মহাপ্রভুর শব্দ না পাঞা ।
স্বরূপেরে বোলাইল কপাট খুলিয়া ॥ ১৩ ॥

এথা গোবিন্দ মহাপ্রভুর শব্দ না পাঞা ।
স্বরূপেরে বোলাইল কপাট খুলিয়া ॥ ১৩ ॥

एथा—यहाँ; **गोविन्द**—गोविन्द; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **शब्द**—शब्द; **ना पाञा**—न सुनकर; **स्वरूपेरे**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **बोलाइल**—बुलाकर; **कपाट**—दरवाजे; **खुलिया**—खोले।

अनुवाद

इस बीच श्री चैतन्य महाप्रभु का कोई शब्द न सुनकर गोविन्द ने तुरन्त स्वरूप दामोदर को बुलाया और दरवाजे खोले।

তবে স্বরূপ-গোসাঞি সঙ্গে লঞা ভক্ত-গণ ।
দেউটি জ্বালিয়া করেন প্রভুর অন্বেষণ ॥ ১৪ ॥

তবে স্বরূপ-গোসাঞি সঙ্গে লঞা ভক্ত-গণ ।
দেউটি জ্বালিয়া করেন প্রভুর অন্বেষণ ॥ ১৪ ॥

तबे—तब; **स्वरूप-गोसाञि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **सङ्गे**—के साथ; **लञा**—लेकर; **भक्त-गण**—भक्तों; **देउटि**—दीपक; **ज्वालिया**—जलाया; **करेन**—की; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **अन्वेषण**—खोज।

अनुवाद

तब स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने दीपक जलाया और वे श्री चैतन्य महाप्रभु को खोजने के लिए सारे भक्तों समेत बाहर चले गये।

ইতি-উতি অন্বেষিয়া সিংহ-দ্বারে গেলা ।
গাভী-গণ-মধ্যে যাই' প্রভুরে পাইলা ॥ ১৫ ॥

इति-उति अन्वेषिया सिंह-द्वारे गेला ।
गाभी-गण-मध्ये याइ' प्रभुरे पाइला ॥ १५ ॥

इति-उति—इधर उधर; **अन्वेषिया**—ढूँढने के लिए; **सिंह-द्वारे**—सिंहद्वार नामक द्वार पर; **गेला**—गये; **गाभी-गण-मध्ये**—गायों के बीच में; **याइ'**—जाकर; **प्रभुरे पाइला**—श्री चैतन्य महाप्रभु मिले।

अनुवाद

इधर-उधर ढूँढने के बाद अन्त में वे सब सिंहद्वार के निकट गोशाला में पहुँचे। वहाँ उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु को गायों के बीच अचेत लेटे हुए पाया।

পেটের ভিতর হস্ত-পদ——কূর্মের আকার ।
মুখে ফেন, পুলকাঙ্গ, নেত্রে অশ্রু-ধার ॥ ১৬ ॥

पेटेर भितर हस्त-पद——कूर्मेर आकार ।
मुखे फेन, पुलकाङ्ग, नेत्रे अश्रु-धार ॥ १६ ॥

पेटेर—पेट; **भितर**—के भीतर; **हस्त-पद**—हाथ और पाँव; **कूर्मेर आकार**—कछुवे के जैसे; **मुखे**—मुख में; **फेन**—झाग; **पुलक-अङ्ग**—शरीर में फुंसियाँ; **नेत्रे**—आँखों में; **अश्रु-धार**—अश्रुधारा।

अनुवाद

उनके हाथ तथा पाँव उनके पेट के भीतर प्रवेश कर गये थे, मानो कछुवे के अंग हों। उनके मुख से झाग निकल रहा था, उनके शरीर भर में फुंसियाँ निकल आई थीं और उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

অচেতন পড়িয়াছেন,—যেন কুষ্মাণ্ড-ফল ।
বাহিরে জড়িমা, অন্তরে আনন্দ-বিহ্বল ॥ ১৭॥

অচেতন পড়িয়াছেন,—য়েন কুষ্মাণ্ড-ফল ।
বাহিরে জড়িমা, অন্তরে আনন্দ-বিহ্বল ॥ ১৭॥

অচেতন—अचेत; **পড়িয়াছেন**—पड़े हुए थे; **য়েন**—जैसे; **কুষ্মাণ্ড-ফল**—कद्दू के फल जैसा; **বাহিরে**—बाहर से; **জড়িমা**—पूर्णतया जड़; **অন্তরে**—भीतर से; **আনন্দ-বিহ্বল**—दिव्य आनन्द से विह्वल।

अनुवाद

जब महाप्रभु वहाँ अचेत पड़े थे, तब उनका शरीर एक बड़े कुम्हड़े जैसा लग रहा था। बाहर से वे पूर्णतया जड़ थे, किन्तु भीतर ही भीतर वे अपार दिव्य आनन्द का अनुभव कर रहे थे।

গাভী সব চৌদিকে শুঙ্কে প্রভুর শ্রী-অঙ্গ ।
দূর কৈলে নাহি ছাড়ে প্রভুর শ্রী-অঙ্গ-সঙ্গ ॥ ১৮॥
গাভী সব চৌদিকে শুঙ্কে প্রভুর শ্রী-অঙ্গ ।
দূর কৈলে নাহি ছাড়ে প্রভুর শ্রী-অঙ্গ-সঙ্গ ॥ ১৮॥

গাভী—गौवें; **সব**—सारी; **চৌ-দিকে**—चारों ओर; **শুঙ্কে**—सूँघती थीं; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **শ্রী-অঙ্গ**—दिव्य शरीर को; **দূর কৈলে**—रोकना चाहा; **নাহি ছাড়ে**—नहीं त्याग करना चाहा; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **শ্রী-অঙ্গ-সঙ্গ**—दिव्य शरीर का संग।

अनुवाद

महाप्रभु के चारों ओर सारी गौवें उनके दिव्य शरीर को सूँघ रही थीं। जब भक्तों ने उन्हें रोकना चाहा, तो उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु के दिव्य शरीर का संग त्याग करना नहीं चाहा।

অনেক করিলা যত্ন, না হয় চেতন ।
প্রভুরে উঠাঞা ঘরে আনিলা ভক্ত-গণ ॥ ১৯॥
অনেক করিলা য়ত্ন, না হয় চেতন ।
প্রভুরে উঠাঞা ঘরে আনিলা ভক্ত-গণ ॥ ১৯॥

अनेक—अनेक; **करिला**—किया; **यत्न**—प्रयत्न; **ना हय**—नहीं थी; **चेतन**—चेतना; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **उठाञा**—उठकर; **घरे**—घर; **आनिला**—लाये; **भक्त-गण**—भक्तगण।

अनुवाद

भक्तों ने नाना प्रकार से महाप्रभु को उठाना चाहा, किन्तु उनकी चेतना लौट नहीं आई। इसलिए उन सबों ने उन्हें उठा लिया और घर लौटा ले आये।

उच्च करि' श्रवणे करे नाम-सङ्कीर्तन ।
अनेक-क्षणे महाप्रभु पाइला चेतन ॥२०॥

उच्च करि' श्रवणे करे नाम-सङ्कीर्तन ।
अनेक-क्षणे महाप्रभु पाइला चेतन ॥ २० ॥

उच्च करि'—उच्च स्वर में; **श्रवणे**—कान में; **करे**—किया; **नाम-सङ्कीर्तन**—पवित्र नाम का संकीर्तन; **अनेक-क्षणे**—काफी देर बाद; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पाइला चेतन**—चेतना प्राप्त हुई।

अनुवाद

सारे भक्त महाप्रभु के कान में उच्च स्वर से हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन करने लगे, तो काफी देर बाद श्री चैतन्य महाप्रभु को फिर से चेतना प्राप्त हुई।

चेतन ह-इले हस्त-पाद बाहिरे आइल ।
पूर्ववत् यथा-योग्य शरीर ह-इल ॥२१॥

चेतन ह-इले हस्त-पाद बाहिरे आइल ।
पूर्ववत् यथा-योग्य शरीर ह-इल ॥ २१ ॥

चेतन ह-इले—जब चेतना आई; **हस्त-पाद**—हाथ और पाँव; **बाहिरे**—बाहर; **आइल**—आये; **पूर्ववत्**—पहले जैसे; **यथा-योग्य**—यथायोग्य; **शरीर**—शरीर; **ह-इल**—हो गया।

अनुवाद

जब उन्हें चेतना आई, तब उनके हाथ पाँव उनके शरीर से बाहर निकल आये और उनका सारा शरीर पूर्ववत् हो गया।

উঠিয়া বসিলেন প্রভু, চাহেন ইতি-উতি ।
স্বরূপে কহেন,—"তুমি আমা আনিলা কতি? ॥২২॥

उठिया वसिलेन प्रभु, चाहेन इति-उति ।
स्वरूपे कहेन,—"तुमि आमा आनिला कति? ॥ २२॥

उठिया—उठकर; **वसिलेन**—बैठ गये; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **चाहेन**—देखने लगे; **इति-उति**—इधर-उधर; **स्वरूपे**—स्वरूप दामोदर को; **कहेन**—कहा; **तुमि**—तुम; **आमा**—मुझे; **आनिला**—ले आये हो; **कति**—कहाँ।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु उठ खड़े हुए और फिर से बैठ गये। इधर-उधर देखकर उन्होंने स्वरूप दामोदर से पूछा, "तुम मुझे कहाँ ले आये हो?

বেণু-শব্দ শুনি' আমি গেলাঙ বৃন্দাবন ।
দেখি,—গোষ্ঠে বেণু বাজায় ব্রজেন্দ্র-নন্দন ॥২৩॥

वेणु-शब्द शुनि' आमि गेलाङ वृन्दावन ।
देखि,—गोष्ठे वेणु बाजाय व्रजेन्द्र-नन्दन ॥ २३॥

वेणु-शब्द—वंशी की ध्वनि; **शुनि'**—सुनकर; **आमि**—मैं; **गेलाङ**—गया; **वृन्दावन**—वृन्दावन को; **देखि**—मैंने देखा; **गोष्ठे**—गोचौरण भूमि में; **वेणु**—वंशी; **बाजाय**—बजाते थे; **व्रजेन्द्र-नन्दन**—कृष्ण, महाराज नन्द के पुत्र।

अनुवाद

"वंशी की ध्वनि सुनकर मैं वृन्दावन चला गया और वहाँ पर मैंने देखा कि महाराज नन्द के पुत्र श्रीकृष्ण गोचौरण भूमि में अपनी वंशी बजा रहे हैं।

সঙ্কেত-বেণু-নাদে রাধা আনি' কুঞ্জ-ঘরে ।
কুঞ্জেরে চলিলা কৃষ্ণ ক্রীড়া করিবারে ॥২৪॥

सङ्केत-वेणु-नादे राधा आनि' कुञ्ज-घरे ।
कुञ्जेरे चलिला कृष्ण क्रीड़ा करिबारे ॥ २४॥

सङ्केत-वेणु-नादे—वंशी की ध्वनि के संकेत से; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **आनि'**—

ले आये; **कुञ्ज-घरे**—कुंज में; **कुञ्जेरे**—कुंज के भीतर; **चलिला**—चले गये; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **क्रीड़ा करिबारे**—लीला करने के लिए।

अनुवाद

"अपनी वंशी की ध्वनि के संकेत से वे श्रीमती राधारानी को एक कुंज में ले आये। फिर वे उनके साथ लीला करने के लिए कुंज के भीतर चले गये।

तोंर पाछे पाछे आमि करिनु गमन ।
तोंर भूषा-ध्वनिते आमार हरिल श्रवण ॥२५॥
ताँर पाछे पाछे आमि करिनु गमन ।
ताँर भूषा-ध्वनिते आमार हरिल श्रवण ॥ २५ ॥

ताँर पाछे पाछे—उनके पीछे; **आमि**—मैं; **करिनु गमन**—गया; **ताँर**—उनके; **भूषा-ध्वनिते**—आभूषणों की ध्वनि से; **आमार**—मेरे; **हरिल**—मुग्ध हो गये; **श्रवण**—कान।

अनुवाद

"मेरे कान उनके आभूषणों की ध्वनि से मुग्ध हो गये और मैंने कृष्ण के पीछे-पीछे कुंज में प्रवेश किया।

गोपी-गण-सह विहार, हास, परिहास ।
कण्ठ-ध्वनि-उक्ति शुनि' मोर कर्णोल्लास ॥२६॥
गोपी-गण-सह विहार, हास, परिहास ।
कण्ठ-ध्वनि-उक्ति शुनि' मोर कर्णोल्लास ॥ २६ ॥

गोपी-गण-सह—गोपियों के साथ; **विहार**—लीला; **हास**—हास; **परिहास**—परिहास; **कण्ठ-ध्वनि-उक्ति**—कण्ठध्वनि; **शुनि'**—सुनकर; **मोर**—मेरा; **कर्ण-उल्लास**—कानों का उल्लास।

अनुवाद

"मैंने देखा कि कृष्ण तथा गोपियाँ हास-परिहास करते हुए सभी प्रकार की क्रीड़ा का आनन्द ले रहे थे। उनकी कण्ठध्वनि सुनकर मेरे कानों का उल्लास बढ़ गया।

হেন-কালে তুমি-সব কোলাহল করি' ।
আমা ইঁহা লঞা আইলা বলাত্কার করি' ॥২৭॥

হেন-কালে তুমি-সব কোলাহল করি' ।
আমা ইঁহা লঞা আইলা বলাত্কার করি' ॥ ২৭॥

হেন-কালে—इस समय; **তুমি-সব**—तुम सब; **কোলাহল করি'**—कोलाहल करते हुए; **আমা**—मुझे; **ইঁহা**—यहाँ; **লঞা আইলা**—ले आये; **বলাত্কার করি'**—बलपूर्वक।

अनुवाद

"तभी तुम सब कोलाहल करते हुए मुझे बलपूर्वक यहाँ ले आये।

শুনিতে না পাইনু সেই অমৃত-সম বাণী ।
শুনিতে না পাইনু ভূষণ-মুরলীর ধ্বনি'' ॥২৮॥

শুনিতে না পাইনু সেই অমৃত-সম বাণী ।
শুনিতে না পাইনু ভূষণ-মুরলীর ধ্বনি" ॥ ২৮॥

শুনিতে না পাইনু—मैं सुन नहीं सका; **সেই**—उन; **অমৃত-সম**—अमृतमयी; **বাণী**—वाणी; **শুনিতে না পাইনু**—सुन नहीं पाया; **ভূষণ**—आभूषणों की; **মুরলীর**—मुरली की; **ধ্বনি**—ध्वनि।

अनुवाद

"चूँकि तुम लोग मुझे यहाँ लौटा ले आये, इसलिए मैं न तो कृष्ण एवं गोपियों की अमृतमयी वाणी सुन पाया, न ही मैं उनके आभूषणों या मुरली की ध्वनि सुन सका।"

ভাবাবেশে স্বরূপে কহেন গদগদ-বাণী ।
'কর্ণ তৃষ্ণায় মরে, পড় রসায়ন, শুনি' ॥২৯॥

ভাবাবেশে স্বরূপে কহেন গদ্গদ-বাণী ।
'কর্ণ তৃষ্ণায় মরে, পড় রসায়ন, শুনি' ॥ ২৯॥

ভাব-আবেশে—अत्यन्त भावावेश में; **স্বরূপে**—स्वरूप दामोदर को; **কহেন**—कहा; **গদ্গদ-বাণী**—गद्गद् वाणी से; **কর্ণ**—कान; **তৃষ্ণায়**—तृष्णा के कारण; **মরে**—मर रहे हैं; **পড়**—पढ़ो; **রস-আয়ন**—कुछ आस्वाद्य; **শুনি**—मुझे सुनने दो।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अत्यन्त भावावेश में स्वरूप दामोदर से अवरुद्ध वाणी में कहा, "मेरे कान तृष्णा के कारण मर रहे हैं। कृपा करके इस तृष्णा को बुझाने के लिए कुछ सुनाओ और मुझे सुनने दो।"

स्वरूप-गोसाञि प्रभुर भाव जानिया ।
भागवतेर श्लोक पड़े मधुर करिया ॥३०॥

स्वरूप-गोसाञि प्रभुर भाव जानिया ।
भागवतेर श्लोक पड़े मधुर करिया ॥ ३० ॥

स्वरूप-गोसाञि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **भाव**—भाव को; **जानिया**—जानकर; **भागवतेर**—*श्रीमद्भागवत* से; **श्लोक**—श्लोक; **पड़े**—पढ़ा; **मधुर करिया**—मधुर स्वर में।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के ऊर्मिपूर्ण भाव को जानकर स्वरूप दामोदर ने मधुर स्वर में 'श्रीमद्भागवत' से निम्नलिखित श्लोक सुनाया।

का स्त्र्यङ्ग ते कल-पदामृत-वेणु-गीत-
सम्मोहितार्य-चरितान्न चलेत्त्रि-लोक्याम् ।
त्रैलोक्य-सौभगमिदं च निरीक्ष्य रूपं
यद्गो-द्विज-द्रुम-मृगाः पुलकान्यबिभ्रन् ॥३१॥

का स्त्र्यङ्ग ते कल-पदामृत-वेणु-गीत-
सम्मोहितार्य-चरितान्न चलेत्त्रि-लोक्याम् ।
त्रैलोक्य-सौभगमिदं च निरीक्ष्य रूपं
यद्गो-द्विज-द्रुम-मृगाः पुलकान्यबिभ्रन् ॥ ३१ ॥

का—कौन सी; **स्त्री**—स्त्री; **अङ्ग**—हे कृष्ण; **ते**—आपके; **कल-पद**—मधुर पदों वाले; **अमृत-वेणु-गीत**—वंशी से निकले मधुर गीत; **सम्मोहिता**—पूर्णतया मोहित; **आर्य-चरितात्**—वैदिक संस्कृति के अनुसार सतीत्व के मार्ग से; **न**—नहीं; **चलेत्**—चलित हो जायेगी; **त्रि-लोक्याम्**—तीनों लोकों में; **त्रै-लोक्य-सौभगम्**—तीनों लोकों के कल्याणकारक; **इदम्**—यह; **च**—तथा; **निरीक्ष्य**—देखकर; **रूपम्**—सुन्दरता; **यत्**—जो; **गो**—गौवें; **द्विज**—

पक्षी; **द्रुम**—वृक्ष; **मृगाः**—हिरन जैसे जंगल के प्राणी; **पुलकानि**—दिव्य हर्ष; **अबिभ्रन्**—व्यक्त करते हैं।

अनुवाद

"(गोपियों ने कहा :) 'हे कृष्ण, तीनों लोकों में ऐसी कौन स्त्री है, जो आपकी अद्भुत वंशी से निकले मधुर गीतों की लय से मोहित न हो जाय? इस तरह ऐसी कौन होगी, जो सतीत्व के मार्ग से च्युत नहीं हो जायेगी? आपका सौन्दर्य तीनों लोकों में अत्यन्त उत्कृष्ट है। आपकी सुन्दरता को देखकर गौवें, पक्षी, पशु, तथा जंगल के वृक्ष भी हर्ष से स्तम्भित हो जाते हैं।'

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.२९.४०) से उद्धृत है।

शुनि' प्रभु गोपी-भावे आविष्ट ह-ईला ।
भागवतेर श्लोकेर अर्थ करिते लागिला ॥ ३२॥

शुनि' प्रभु गोपी-भावे आविष्ट ह-इला ।
भागवतेर श्लोकेर अर्थ करिते लागिला ॥ ३२ ॥

शुनि'—सुनकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **गोपी-भावे**—गोपी भाव से; **आविष्ट ह-इला**—विह्वल हो गये; **भागवतेर**—*श्रीमद्भागवत* के; **श्लोकेर**—श्लोक का; **अर्थ**—अर्थ; **करिते लागिला**—व्याख्या करने लगे।

अनुवाद

यह श्लोक सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु गोपी-भाव से अभिभूत हो गये और उसकी व्याख्या करने लगे।

हैल गोपी-भावावेश, कैल रासे परवेश,
कृष्णेर शुनि' उपेक्षा-वचन ।
कृष्णेर मुख-हास्य-वाणी, त्यागे ताहा सत्य मानि',
रोषे कृष्णे देन ओलाहन ॥ ३३॥

हैल गोपी-भावावेश, कैल रासे परवेश,
कृष्णेर शुनि' उपेक्षा-वचन ।

कृष्णेर मुख-हास्य-वाणी, त्यागे ताहा सत्य मानि',
रोषे कृष्णे देन ओलाहन ॥ ३३ ॥

हैल—था; **गोपी**—गोपियों का; **भाव-आवेश**—भावावेश; **कैल**—किया; **रासे**—रासस्थली में; **परवेश**—प्रविष्ट हुईं; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण का; **शुनि'**—सुनकर; **उपेक्षा-वचन**—उपेक्षा के शब्द; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण का; **मुख**—मुख; **हास्य**—हँसकर; **वाणी**—लेकर; **त्यागे**—परित्याग; **ताहा**—वह; **सत्य मानि'**—सत्य मानकर; **रोषे**—क्रोध में; **कृष्णे**—भगवान् कृष्ण को; **देन**—दिया; **ओलाहन**—उलाहना।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "गोपियाँ भावावेश में रासनृत्य की स्थली में प्रविष्ट हुईं, किन्तु कृष्ण से उपेक्षा तथा उदासीनता के शब्द सुनकर वे समझ गईं कि कृष्ण उनका परित्याग करने वाले हैं। इसलिए वे उन्हें क्रोध में उलाहना देने लगीं।

''नागर, कह, तुमि करिया निश्चय
एइ त्रिजगज्जरि', आछे यत योग्या नारि, ।
तोमार वेणु काँहा ना आकर्षय? ॥ ३४ ॥

"नागर, कह, तुमि करिया निश्चय
एइ त्रिजगत् भरि', आछे यत योग्या नारि, ।
तोमार वेणु काहाँ ना आकर्षय? ॥ ३४ ॥

नागर—हे प्रियतम; **कह**—कहो; **तुमि**—आप; **करिया**—करके; **निश्चय**—निश्चय; **एइ**—यह; **त्रि-जगत्**—त्रिभुवन; **भरि'**—भरकर; **आछे**—हैं; **यत**—कितनी; **योग्या**—योग्य; **नारी**—स्त्रियाँ; **तोमार**—आपकी; **वेणु**—वंशी; **काहाँ**—जहाँ; **ना**—नहीं; **आकर्षय**—आकृष्ट करती।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "'हे प्रियतम, जरा हमारे एक प्रश्न का उत्तर तो दो। इस ब्रह्माण्ड में कौन ऐसी तरुणी है, जो आपकी वंशी की ध्वनि से आकृष्ट नहीं होती?

कैला जगते वेणु-ध्वनि, सिद्ध-मन्त्रा योगिनी
दूती हञा मोहे नारी-मन ।

মহোৎকণ্ঠা বাড়াঞা, আর্য-পথ ছাড়াঞা,
আনি' তোমায় করে সমর্পণ ॥ ৩৫ ॥

कैला जगते वेणु-ध्वनि, सिद्ध-मन्त्रा ग्रोगिनी
दूती हञा मोहे नारी-मन ।
महोत्कण्ठा बाड़ाञा, आर्य्र-पथ छाड़ाञा,
आनि' तोमाय करे समर्पण ॥ ३५ ॥

कैला—आपने किया है; **जगते**—जगत् में; **वेणु-ध्वनि**—वंशी की ध्वनि; **सिद्ध-मन्त्रा**—मन्त्रों के उच्चारण में सिद्ध; **ग्रोगिनी**—योगिनी; **दूती**—दूती; **हञा**—होकर; **मोहे**—मोहित करती है; **नारी-मन**—स्त्रियों के मन; **महा-उत्कण्ठा**—तीव्र उत्कंठा; **बाड़ाञा**—बढ़ाती है; **आर्य्र-पथ**—विधिविधान; **छाड़ाञा**—परित्याग करवाती है; **आनि'**—लाकर; **तोमाय**—आपके पास; **करे समर्पण**—देती है।

अनुवाद

"'जब आप अपनी वंशी बजाते हो, तब यह ध्वनि मन्त्रोच्चारण-कला में पटु योगिनी के जैसी दूती का सा कार्य करती है। यह दूती ब्रह्माण्ड की सारी स्त्रियों को विमोहित करती है और उन्हें आपकी ओर आकृष्ट करती है। तब वह उनकी उत्कण्ठा को बढ़ाकर अपने से बड़ों की आज्ञा मानने के विधान का परित्याग करवाती है। अन्त में वह उन्हें बलपूर्वक आपके पास माधुर्य-प्रेम में आत्म समर्पण कराने लाती है।

ধর্ম ছাড়ায় বেণু-দ্বারে, হানে কটাক্ষ-কাম-শরে,
লজ্জা, ভয়, সকল ছাড়ায় ।
এবে আমায় করি' রোষ, কহি' পতি-ত্যাগে 'দোষ',
ধার্মিক হঞা ধর্ম শিখায়! ॥ ৩৬ ॥

धर्म छाड़ाय वेणु-द्वारे, हाने कटाक्ष-काम-शरे,
लज्जा, भय, सकल छाड़ाय ।
एबे आमाय करि' रोष, कहि' पति-त्यागे 'दोष',
धार्मिक हञा धर्म शिखाय! ॥ ३६ ॥

धर्म—धार्मिक सिद्धान्त; **छाड़ाय**—त्यागने के लिए प्रेरित करती है; **वेणु-द्वारे**—वंशी द्वारा; **हाने**—बेधती है; **कटाक्ष**—चितवन; **काम-शरे**—काम के बाण; **लज्जा**—लज्जा; **भय**—भय; **सकल**—सब; **छाड़ाय**—त्यागने के लिए प्रेरित करती है; **एबे**—अब; **आमाय**—हमको;

करि' रोष—क्रोधित होकर; **कहि'**—कहते हो; **पति-त्यागे**—अपने पतियों को छोड़ना; **दोष**—दोष; **धार्मिक**—अत्यन्त धार्मिक; **हञा**—होकर; **धर्म**—धार्मिक सिद्धान्त; **शिखाय**—आप सीखाते हो।

अनुवाद

"'आपकी वंशी की ध्वनि हमें काम के बाणों से बलात् बेधने वाली आपकी चितवन के साथ मिलकर हमें धार्मिक जीवन के विधिविधानों की उपेक्षा करने के लिए प्रेरित करती है। इस तरह हम कामेच्छाओं से उत्तेजित होकर सारी लज्जा तथा भय त्यागकर आपके पास आती हैं। किन्तु अब आप हमसे रूठे हुए हो। आप हमारे द्वारा धार्मिक सिद्धान्तों का उल्लंघन किये जाने से तथा अपने अपने घरों तथा पतियों को छोड़ने पर हममें दोष निकाल रहे हो। जब आप हमें धार्मिक सिद्धान्तों का उपदेश देते हो, तो हम निरुपाय हो जाती हैं।

अन्य-कथा, अन्य-मन, बाहिरे अन्य आचरण,
एइ सब शठ-परिपाटी ।
तुमि जान परिहास, हय नारीर सर्व-नाश,
छाड़ एइ सब कुटीनाटी ॥ ३७॥

अन्य-कथा, अन्य-मन, बाहिरे अन्य आचरण,
एइ सब शठ-परिपाटी ।
तुमि जान परिहास, हय नारीर सर्व-नाश,
छाड़ एइ सब कुटीनाटी ॥ ३७॥

अन्य—भिन्न; **कथा**—शब्द; **अन्य**—भिन्न; **मन**—मन; **बाहिरे**—बाह्य रूप से; **अन्य**—भिन्न; **आचरण**—आचरण; **एइ**—ये; **सब**—सब; **शठ-परिपाटी**—सुनियोजित चाल; **तुमि**—आप; **जान**—जानते हैं; **परिहास**—परिहास; **हय**—है; **नारीर**—स्त्रियों का; **सर्व-नाश**—सर्वनाश; **छाड़**—कृपया त्याग दो; **एइ**—ये; **सब**—सब; **कुटीनाटी**—चातुर्यपूर्ण चाल।

अनुवाद

"'हम जानती हैं कि यह आपकी सुनियोजित चाल है। आपको ऐसा परिहास करना आता है, जिससे स्त्रियों का सर्वनाश हो जाता है, किन्तु

हम समझ सकती हैं कि आपके वास्तविक मन, वचन तथा व्यवहार सर्वथा भिन्न हैं। इसलिए आप कृपया इन चातुर्यपूर्ण चालों को छोड़ दो।

বেণু-নাদ অমৃত-ঘোলে, অমৃত-সমান মিঠা বোলে,
অমৃত-সমান ভূষণ-শিঞ্জিত ।
তিন অমৃতে হরে কাণ, হরে মন, হরে প্রাণ,
কেমনে নারী ধরিবেক চিত?'' ॥৩৮॥

वेणु-नाद अमृत-घोले, अमृत-समान मिठा बोले,
अमृत-समान भूषण-शिञ्जित ।
तिन अमृते हरे काण, हरे मन, हरे प्राण,
केमने नारी धरिबेक चित?" ॥ ३८ ॥

वेणु-नाद—वंशी की ध्वनि; **अमृत-घोले**—अमृत तुल्य छाछ के समान; **अमृत-समान**—अमृत के समान; **मिठा बोले**—मधुर वाणी; **अमृत-समान**—अमृत के समान; **भूषण-शिञ्जित**—आभूषणों की ध्वनि; **तिन**—है; **अमृते**—अमृत; **हरे**—आकृष्ट करती है; **काण**—कान; **हरे**—आकृष्ट करती है; **मन**—मन; **हरे**—आकृष्ट करती है; **प्राण**—प्राण; **केमने**—कैसे; **नारी**—स्त्री; **धरिबेक**—धारण करेगी; **चित**—धैर्य या चेतना।

अनुवाद

"'आपकी वंशी की ध्वनि की अमृतमय छाछ, आपके मधुर शब्दों का अमृत तथा आपके आभूषणों की अमृत तुल्य ध्वनि—ये तीनों हमारे कानों, मनों तथा प्राणों को आकृष्ट करने के लिए मिल जाते हैं। इस तरह आप हमें मार डाल रहे हो।"

এত কহি' ক্রোধাবেশে, ভাবের তরঙ্গে ভাসে,
উৎকণ্ঠা-সাগরে ডুবে মন ।
রাধার উৎকণ্ঠা-বাণী, পড়ি' আপনে বাখানি,
কৃষ্ণ-মাধুর্য করে আস্বাদন ॥৩৯॥

एत कहि' क्रोधावेशे, भावेर तरङ्गे भासे,
उत्कण्ठा-सागरे डुबे मन ।
राधार उत्कण्ठा-वाणी, पड़ि' आपने वाखानि,
कृष्ण-माधुर्य्य करे आस्वादन ॥ ३९ ॥

एत कहि'—यह कहकर; **क्रोध-आवेशे**—रोष के भाव में; **भावेर तरङ्गे**—प्रेमावेश की तरंगों में; **भासे**—तैरते थे; **उत्कण्ठा**—उत्कंठा के; **सागरे**—सागर में; **डुबे मन**—मन को लीन करके; **राधार**—श्रीमती राधारानी के; **उत्कण्ठा-वाणी**—उत्कंठा से भरे शब्द; **पड़ि'**—पढ़कर; **आपने**—स्वयं; **वाखानि**—व्याख्या की; **कृष्ण-माधुर्य**—कृष्ण की मधुरता; **करे आस्वादन**—आस्वादन किया।

अनुवाद

चूँकि श्री चैतन्य महाप्रभु प्रेम की तरंगों में तैर रहे थे, अतः उन्होंने ये शब्द रोष की मुद्रा में कहे। उत्कण्ठा के सागर में डूबकर उन्होंने उसी भाव को व्यक्त करने वाला श्रीमती राधारानी द्वारा कहा हुआ श्लोक सुनाया। तब उन्होंने स्वयं इस श्लोक की व्याख्या की और कृष्ण की मधुरता का आस्वादन किया।

नदज्जलद-निस्वनः श्रवण-कर्षि-सच्छिञ्जितः
सनर्म-रस-सूचकाक्षर-पदार्थ-भङ्ग्युक्तिकः ।
रमादिक-वराङ्गना-हृदय-हारि-वंशी-कलः
स मे मदन-मोहनः सखि तनोति कर्ण-स्पृहाम् ॥ ४० ॥

नदज्जलद-निस्वनः श्रवण-कर्षि-सच्छिञ्जितः
सनर्म-रस-सूचकाक्षर-पदार्थ-भङ्ग्युक्तिकः ।
रमादिक-वराङ्गना-हृदय-हारि-वंशी-कलः
स मे मदन-मोहनः सखि तनोति कर्ण-स्पृहाम् ॥ ४० ॥

नदत्—गर्जन करने वाला; **जलद**—बादल; **निस्वनः**—जिनकी वाणी; **श्रवण**—कान; **कर्षि**—आकृष्ट करती है; **सत्-शिञ्जितः**—जिनके आभूषणों की रुनझुन; **स-नर्म**—गहन अर्थ से; **रस-सूचक**—परिहास भरे; **अक्षर**—शब्द; **पद-अर्थ**—अर्थ; **भङ्गि**—सूचित करते हैं; **उक्तिकः**—जिनके शब्द; **रमा-आदिक**—लक्ष्मी देवी से लेकर; **वर-अङ्गना**—सुन्दरियों का; **हृदय-हारि**—हृदय आकृष्ट करते हैं; **वंशी-कलः**—जिनकी वंशी की ध्वनि; **सः**—वह; **मे**—मेरा; **मदन-मोहनः**—मदनमोहन; **सखि**—हे प्रिय सखी; **तनोति**—वर्धित करते हैं; **कर्ण-स्पृहाम्**—मेरे कानों की इच्छा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने आगे कहा, "'हे सखी, पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण की वाणी आकाश में गर्जन करने वाले बादल के समान गम्भीर

है। वे अपने आभूषणों की रुनझुन से गोपियों के कानों को और अपनी वंशी की ध्वनि से लक्ष्मी देवी तक को तथा अन्य सुन्दरियों को आकृष्ट करते हैं। मदनमोहन नाम से विख्यात वे भगवान्, जिनके परिहास के वचन अनेक संकेत तथा गम्भीर अर्थ रखते हैं, मेरे कानों की कामेच्छाओं को वर्धित कर रहे हैं।'

तात्पर्य

यह श्लोक *गोविन्द लीलामृत* (८.५) में प्राप्य है।

"'कण्ठेर गम्भीर ध्वनि, नवघन-ध्वनि जिनि',
यार गुणे कोकिल लाजाय ।
तार एक श्रुति-कणे, डुबाय जगतेर काणे,
पुनः काण बाहुड़ि' ना आय ॥ ४१॥

**"कण्ठेर गम्भीर ध्वनि, नवघन-ध्वनि जिनि',
यार गुणे कोकिल लाजाय ।
तार एक श्रुति-कणे, डुबाय जगतेर काणे,
पुनः काण बाहुड़ि' ना आय ॥ ४१॥**

कन्ठेर—कंठ की; **गम्भीर**—गम्भीर; **ध्वनि**—ध्वनि; **नव-घन**—नवीन बादल की; **ध्वनि**—गर्जन; **जिनि'**—को जीतने वाली; **यार**—जिसके; **गुणे**—लक्षण; **कोकिल**—कोयल को; **लाजाय**—लज्जित करती है; **तार**—उसके; **एक**—एक; **श्रुति-कणे**—ध्वनि का कण; **डुबाय**—आप्लावित करता है; **जगतेर**—समग्र जगत् को; **काणे**—कान; **पुनः**—पुनः; **काण**—कान; **बाहुड़ि'**—बाहर जाकर; **ना आय**—नहीं आ सकता।

अनुवाद

"कृष्ण की गम्भीर वाणी नवीन उमड़े बादलों से भी अधिक गर्जन करने वाली है और उनका मधुर गीत कोयल की मधुर वाणी को भी पराजित करने वाला है। निस्सन्देह, उनका गीत इतना मधुर है कि उसकी ध्वनि का एक कण भी सारे जगत् को आप्लावित कर सकता है। यदि ऐसा कण किसी के कान में प्रवेश करता है, तो वह तुरन्त ही समस्त अन्य प्रकार के श्रवण से विहीन हो जाता है।

কহ, সখি, কি করি উপায়?
কৃষ্ণের সে শব্দ-গুণে, হরিলে আমার কাণে, ।
এবে না পায়, তৃষ্ণায় মরি' যায় ॥৪২॥

कह, सखि, कि करि उपाय?
कृष्णेर से शब्द-गुणे, हरिले आमार काणे, ।
एबे ना पाय, तृष्णाय मरि' ग्नाय ॥४२॥

कह—कृपया कहो; **सखि**—हे प्रिय सखी; **कि**—क्या; **करि**—मैं करूँ; **उपाय**—साधन, उपाय; **कृष्णेर**—कृष्ण का; **से**—वह; **शब्द**—ध्वनि के; **गुणे**—गुण; **हरिले**—आकृष्ट होकर; **आमार**—मेरे; **काणे**—कान; **एबे**—अब; **ना पाय**—नहीं पाती; **तृष्णाय**—तृष्णा से; **मरि' ग्नाय**—मैं मर रही हूँ।

अनुवाद

"हे सखी, मुझे बताओ कि मैं क्या करूँ। मेरे कानों को कृष्ण की ध्वनि के गुणों ने लूट लिया है। किन्तु अब मैं यह दिव्य ध्वनि नहीं सुन पा रही और मैं उसके बिना मृतप्राय हूँ।

নূপুর-কিঙ্কিণী-ধ্বনি, হংস-সারস জিনি',
কঙ্কণ-ধ্বনি চটকে লাজায় ।
এক-বার যেই শুনে, ব্যাপি রহে' তার কাণে,
অন্য শব্দ সে-কাণে না যায় ॥৪৩॥

नूपुर-किङ्किणी-ध्वनि, हंस-सारस जिनि',
कङ्कण-ध्वनि चटके लाजाय ।
एक-बार ग्नेइ शुने, व्यापि रहे' तार काणे,
अन्य शब्द से-काणे ना ग्नाय ॥४३॥

नूपुर—नूपुरों की; **किङ्किणी**—रुनझुन; **ध्वनि**—ध्वनि; **हंस**—हंस; **सारस**—सारस; **जिनि'**—को जीतने वाली; **कङ्कण-ध्वनि**—कंगनों की ध्वनि; **चटके**—चटक पक्षी; **लाजाय**—को लज्जित करने वाली; **एक-बार**—एक बार; **ग्नेइ**—जो भी; **शुने**—सुनता है; **व्यापि**—व्यापित होता है; **रहे'**—रहता है; **तार काणे**—कान में; **अन्य**—अन्य; **शब्द**—ध्वनि; **से-काणे**—कान में; **ना ग्नाय**—नहीं जाती।

अनुवाद

"कृष्ण के नूपुरों की ध्वनि हंस तथा सारस के गीतों का भी

अतिक्रमण कर जाती है और उनके कंगनों की ध्वनि चटक पक्षी के गाने को भी लजा देती है। यदि एक बार भी इन ध्वनियों को कानों में प्रविष्ट होने दिया जाय, तो फिर अन्य कुछ भी सुनना सहन नहीं हो सकता।

সে শ্রী-মুখ-ভাষিত, অমৃত হৈতে পরামৃত,
স্মিত-কর্পূর তাহাতে মিশ্রিত ।
শব্দ, অর্থ,—দুই-শক্তি, নানা-রস করে ব্যক্তি,
প্রত্যক্ষর—নর্ম-বিভূষিত ॥ ৪৪ ॥

से श्री-मुख-भाषित, अमृत हैते परामृत,
स्मित-कर्पूर ताहाते मिश्रित ।
शब्द, अर्थ,—दुइ-शक्ति, नाना-रस करे व्यक्ति,
प्रत्यक्षर—नर्म-विभूषित ॥ ४४ ॥

से—वह; **श्री**—सुन्दर; **मुख**—मुख से; **भाषित**—बोली हुई; **अमृत**—अमृत; **हैते**—से भी; **पर-अमृत**—अधिक अमृतमय; **स्मित**—हँसी; **कर्पूर**—कपूर; **ताहाते**—उसमें; **मिश्रित**—मिल जाती है; **शब्द**—ध्वनि; **अर्थ**—अर्थ; **दुइ-शक्ति**—दो शक्तियाँ; **नाना**—नाना; **रस**—रस; **करे व्यक्ति**—व्यक्त करते हैं; **प्रति-अक्षर**—प्रत्येक शब्द; **नर्म-विभूषित**—अर्थ से पूर्ण।

अनुवाद

"कृष्ण की वाणी अमृत से भी कहीं अधिक मीठी होती है। उनका प्रत्येक हर्षित शब्द अर्थपूर्ण होता है और जब उनकी वाणी उनकी कपूर जैसी हँसी से मिल जाती है, तो इस तरह से कृष्ण के शब्दों से उत्पन्न ध्वनि तथा उसका गम्भीर अर्थ विविध दिव्य रसों को उत्पन्न करते हैं।

সে অমৃতের এক-কণ, কর্ণ-চকোর-জীবন,
কর্ণ-চকোর জীয়ে সেই আশে ।
ভাগ্য-বশে কভু পায়, অভাগ্যে কভু না পায়,
না পাইলে মরয়ে পিয়াসে ॥ ৪৫ ॥

से अमृतेर एक-कण, कर्ण-चकोर-जीवन,
कर्ण-चकोर जीये सेइ आशे ।
भाग्य-वशे कभु पाय, अभाग्ये कभु ना पाय,
ना पाइले मरये पियासे ॥ ४५ ॥

से अमृतेर—उस अमृत का; **एक-कण**—एक कण; **कर्ण-चकोर**—कान का, जो चकोर पक्षी के समान है; **जीवन**—जीवन; **कर्ण**—कान; **चकोर**—चकोर पक्षी; **जीये**—जीता है; **सेइ आशे**—उस आशा के साथ; **भाग्य-वशे**—सौभाग्य से; **कभु**—कभी-कभी; **पाय**—पाता है; **अभाग्ये**—दुर्भाग्य से; **कभु**—कभी-कभी; **ना पाय**—नहीं पाता; **ना पाइले**—यदि नहीं पाता; **मरये**—मर जाता है; **पियासे**—प्यास से।

अनुवाद

"उस दिव्य आनन्दमय अमृत का एक कण कान का प्राण है, जो चकोर पक्षी की तरह उस अमृत का आस्वादन करने की आशा में जीवित रहता है। भाग्यवश यह पक्षी कभी तो उसका आस्वादन कर सकता है, किन्तु कभी-कभी दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं कर पाता, इसलिए वह तृष्णा से मरणासन्न हो जाता है।

যেবা বেণু-কল-ধ্বনি, এক-বার তাহা শুনি',
জগন্নারী-চিত্ত আউলায় ।
নীবি-বন্ধ পড়ে খসি', বিনা-মূলে হয় দাসী,
বাউলী হঞা কৃষ্ণ-পাশে ধায় ॥ ৪৬॥

য়েবা বেণু-কল-ধ্বনি, এক-বার তাহা শুনি',
জগন্নারী-চিত্ত আউলায় ।
নীবি-বন্ধ পড়ে খসি', বিনা-মূলে হয় দাসী,
বাউলী হঞা কৃষ্ণ-পাশে ধায় ॥ ৪৬॥

য়েবা—जो भी; **वेणु**—वंशी की; **कल-ध्वनि**—मधुर ध्वनि; **एक-बार**—एक बार; **ताहा**—वह; **शुनि'**—सुनती है; **जगत्**—जगत् की; **नारी**—स्त्रियों के; **चित्त**—हृदय; **आउलाय**—विचलित हो जाते हैं; **नीवि-बन्ध**—कमरबन्ध; **पड़े**—हो जाते हैं; **खसि'**—ढीले; **विना-मूले**—निःशुल्क; **हय**—वे हो जाती हैं; **दासी**—दासियाँ; **बाउली**—बावली; **हञा**—हो जाती हैं; **कृष्ण-पाशे**—कृष्ण के पीछे; **धाय**—दौड़ती हैं ।

अनुवाद

"कृष्ण की वंशी की दिव्य ध्वनि विश्वभर की स्त्रियों के हृदयों को विचलित करती है, चाहे वे उसे एक बार ही क्यों न सुनें। इस तरह उनके कमरबन्ध ढीले पड़ जाते हैं और ये स्त्रियाँ कृष्ण की निशुल्क दासियाँ बन जाती हैं। निस्सन्देह, वे बावली स्त्रियों की तरह कृष्ण की ओर दौड़ती हैं।

যেবা লক্ষ্মী-ঠাকুরাণী, তেঁহো যে কাকলী শুনি',
কৃষ্ণ-পাশ আইসে প্রত্যাশায় ।
না পায় কৃষ্ণের সঙ্গ, বাড়ে তৃষ্ণা-তরঙ্গ,
তপ করে, তবু নাহি পায় ॥ ৪৭ ॥

য়েবা লক্ষ্মী-ঠাকুরাণী, তেঁহো য়ে কাকলী শুনি',
কৃষ্ণ-পাশ আইসে প্রত্যাশায় ।
না পায় কৃষ্ণের সঙ্গ, বাড়ে তৃষ্ণা-তরঙ্গ,
তপ করে, তবু নাহি পায় ॥ ৪৭ ॥

য়েবা—भी; **लक्ष्मी-ठाकुराणी**—लक्ष्मीजी; **तेंहो**—वे; **ये**—जो; **काकली**—वंशी की ध्वनि; **शुनि'**—सुनकर; **कृष्ण-पाश**—भगवान् कृष्ण को; **आइसे**—आती हैं; **प्रत्याशाय**—बड़ी आशा के साथ; **ना पाय**—नहीं पातीं; **कृष्णेर सङ्ग**—कृष्ण का संग; **बाड़े**—बढ़ती है; **तृष्णा**—तृष्णा; **तरङ्ग**—तरंगें; **तप करे**—तपस्या करती हैं; **तबु**—फिर भी; **नाहि पाय**—नहीं पाती।

अनुवाद

"कृष्ण की वंशी की ध्वनि सुनकर लक्ष्मीजी भी उनकी संगति की बहुत बड़ी आशा बाँधकर उनके पास आती हैं, किन्तु तो भी उन्हें वह संगति नहीं मिल पाती। जब उनकी संगति की तृष्णा की लहरें बढ़ती हैं, तो लक्ष्मीजी तपस्या करती हैं, किन्तु तो भी वे उनको नहीं मिल पातीं।

এই শব্দামৃত চারি, যার হয় ভাগ্য ভারি,
সেই কর্ণে ইহা করে পান ।
ইহা যেই নাহি শুনে, সে কাণ জন্মিল কেনে,
কাণাকড়ি-সম সেই কাণ'' ॥ ৪৮ ॥

এই শব্দামৃত চারি, য়ার হয় ভাগ্য ভারি,
সেই কর্ণে ইহা করে পান ।
ইহা যেই নাহি শুনে, সে কাণ জন্মিল কেনে,
কাণাকড়ি-সম সেই কাণ" ॥ ৪৮ ॥

এই—ये; **शब्द-अमृत**—अमृत तुल्य ध्वनि; **चारि**—चार; **य़ार**—जिनका; **हय**—है; **भाग्य भारि**—महान् भाग्य; **सेइ**—ऐसा व्यक्ति; **कर्णे**—कान से; **इहा**—ये ध्वनियाँ; **करे पान**—पीता है; **इहा**—ये ध्वनियाँ; **येइ**—जो भी; **नाहि शुने**—नहीं सुनता; **से**—वे; **काण**—

कान; **जन्मिल**—जन्म लेते हैं; **केने**—क्यों; **काणाकड़ि**—छोटे शंख का छेद; **सम**—के समान; **सेइ काण**—ये कान।

अनुवाद

"जो अत्यन्त भाग्यवान है, वही इन अमृत तुल्य चार प्रकार के शब्दों को सुन सकता है—कृष्ण के शब्द, उनकी नुपूरों तथा कंगनों की रुनझुन, उनकी वाणी तथा उनकी वंशी की ध्वनि। यदि वह इन ध्वनियों को नहीं सुन सकता, तो उसके कान छोटे शंख के छेद के समान व्यर्थ हैं।"

करिते ऐछे विलाप, उठिल उद्वेग, भाव,
मने काहो नाहि आलम्बन ।
उद्वेग, विषाद, मति, औत्सुक्य, त्रास, धृति, स्मृति,
नाना-भावेर ह-इल मिलन ॥ ४९॥

करिते ऐछे विलाप, उठिल उद्वेग, भाव,
मने काहो नाहि आलम्बन ।
उद्वेग, विषाद, मति, औत्सुक्य, त्रास, धृति, स्मृति,
नाना-भावेर ह-इल मिलन ॥ ४९॥

करिते—करके; **ऐछे**—ऐसा; **विलाप**—शोक; **उठिल**—उदय हुआ; **उद्वेग**—उद्वेग; **भाव**—भाव; **मने**—मन में; **काहो**—कहीं भी; **नाहि**—नहीं था; **आलम्बन**—आश्रय; **उद्वेग**—उद्वेग; **विषाद**—विषाद; **मति**—मति; **औत्सुक्य**—उत्सुकता; **त्रास**—त्रास; **धृति**—धृति; **स्मृति**—स्मृति; **नाना-भावेर**—विविध भावों का; **ह-इल**—था; **मिलन**—संमिश्रण।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु इस तरह विलाप कर रहे थे, तो उनके मन में उद्वेग तथा भाव का उदय हुआ, जिससे वे अति चंचल हो उठे। उनमें अनेक दिव्य भावों का मिश्रण हो रहा था यथा उद्वेग, विषाद, मति, उत्सुकता, त्रास, धृति तथा स्मृति इत्यादि।

भाव-शाबल्ये राधार उक्ति, लीला-शुके हैल स्फूर्ति,
सेइ भावे पड़े एक श्लोक ।
उन्मादेर सामर्थ्ये, सेइ श्लोकेर करे अर्थे,
येइ अर्थ नाहि जाने लोक ॥ ५०॥

भाव-शाबल्ये राधार उक्ति, लीला-शुके हैल स्फूर्ति,
सेइ भावे पड़े एक श्लोक ।
उन्मादेर सामर्थ्ये, सेइ श्लोकेर करे अर्थे,
येइ अर्थ नाहि जाने लोक ॥५०॥

भाव-शाबल्ये—सारे भावों के समन्वय में; **राधार**—श्रीमती राधारानी के; **उक्ति**—विधान; **लीला-शुके**—विल्वमंगल ठाकुर में; **हैल**—हुआ; **स्फूर्ति**—उदय; **सेइ भावे**—उस भाव में; **पड़े**—पढ़ा; **एक**—एक; **श्लोक**—श्लोक; **उन्मादेर**—उन्मत्तता के; **सामर्थ्ये**—बल पर; **सेइ श्लोकेर**—उस श्लोक का; **करे अर्थे**—अर्थ बताया; **येइ अर्थ**—जो अर्थ; **नाहि**—नहीं था; **जाने**—ज्ञात; **लोक**—लोगों को।

अनुवाद

इन भावों के समन्वय से बिल्वमंगल ठाकुर (लीला शुक) के मन में श्रीमती राधारानी के एक कथन का उदय हुआ। अब श्री चैतन्य महाप्रभु ने उसी भाव में उस श्लोक को सुनाया और उन्माद के बल पर उन्होंने उसका अर्थ बतलाया, जो सामान्य लोगों को ज्ञात नहीं है।

किमिह कृणूमः कस्य ब्रूमः कृतं कृतमाशया
कथयत कथामन्याां धन्यामहो हृदये शयः ।
मधुर-मधुर-स्मेराकारे मनो-नयनोत्सवे
कृपण-कृपणा कृष्णे तृष्णा चिरं बत लम्बते ॥५१॥

किमिह कृणुमः कस्य ब्रूमः कृतं कृतमाशया
कथयत कथामन्यां धन्यामहो हृदये शयः ।
मधुर-मधुर-स्मेराकारे मनो-नयनोत्सवे
कृपण-कृपणा कृष्णे तृष्णा चिरं बत लम्बते ॥५१॥

किम्—क्या; **इह**—यहाँ; **कृणुमः**—मैं करूँ; **कस्य**—किसे; **ब्रूमः**—मैं कहूँ; **कृतम्**—जो किया गया है; **कृतम्**—किया है; **आशया**—आशा में; **कथयत**—कृपया कहो; **कथाम्**—शब्द; **अन्याम्**—अन्य; **धन्याम्**—शुभ; **अहो**—हाय; **हृदये**—मेरे हृदय में; **शयः**—पड़े हुए हैं; **मधुर-मधुर**—मधुरता से भी मधुर; **स्मेर**—हँसी; **आकारे**—जिनका रूप; **मनः-नयन**—मन तथा आँखों को; **उत्सवे**—जो आनन्द देते हैं; **कृपण-कृपणा**—सर्वाधिक कृपण; **कृष्णे**—कृष्ण के लिए; **तृष्णा**—तृष्णा; **चिरम्**—प्रतिक्षण; **बत**—हाय; **लम्बते**—बढ़ती जाती है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "'हाय, मैं क्या करूँ? मैं किससे कहूँ? मैंने कृष्ण से मिलने की आशा में जो कुछ किया है, उसे अब समाप्त हो जाने दो। कृपया अब कोई शुभ बात कहो, किन्तु कृष्ण के विषय में मत कहो। हाय, कृष्ण तो मेरे हृदय में कामदेव की तरह पड़े हुए हैं, तो फिर मैं उनके विषय में बातें करना कैसे बन्द कर दूँ? मैं कृष्ण को भूल नहीं सकती, जिनकी हँसी स्वयं मधुरता से भी अधिक मधुर है और जो मेरे मन तथा आँखों को आनन्द देने वाले हैं। हाय, कृष्ण के लिए मेरी अगाध तृष्णा प्रति क्षण बढ़ती जा रही है!'

तात्पर्य

यह श्रीमती राधारानी का कथन है, जिसे *कृष्ण कर्णामृत* (४२) से उद्धृत किया गया है।

"এই কৃষ্ণের বিরহে, উদ্বেগে মন স্থির নহে,
প্রাপ্ত্যুপায়-চিন্তন না যায় ।
যেবা তুমি সখী-গণ, বিষাদে বাউল মন,
কারে পুছোঁ, কে কহে উপায়? ॥৫২॥

**"এइ কৃষ্ণের বিরহে, উদ্বেগে মন স্থির নহে,
প্রাপ্ত্যুপায়-চিন্তন না য়ায় ।
য়েবা তুমি সখী-গণ, বিষাদে বাউল মন,
কারে পুছোঁ, কে কহে উপায়? ॥৫২॥**

এइ—यह; **কৃষ্ণের**—कृष्ण के; **বিরহে**—विरह में; **উদ্বেগে**—उद्वेग में; **মন**—मन; **স্থির**—अधीर; **নহে**—नहीं है; **প্রাপ্তি-উপায়**—पाने का उपाय; **চিন্তন না য়ায়**—मैं नहीं सोच पा रही; **য়েবা**—सब; **তুমি**—तुम; **সখী-গণ**—सखियाँ; **বিষাদে**—विषाद में; **বাউল**—बावली; **মন**—मन; **কারে**—किसे; **পুছোঁ**—मैं पूछुं; **কে**—जो; **কহে**—कहेगा; **উপায়**—उपाय।

अनुवाद

"कृष्ण के विरह से उत्पन्न चिन्ता ने मुझे अधीर बना दिया है और मैं उनसे मिलने का कोई उपाय नहीं सोच पा रही। हे सखियों, तुम भी विषाद

से बावली हो रही हो। अतएव अब मुझे कौन बतायेगा कि उन्हें कैसे खोजा जाय?

হা হা সখি, কি করি উপায়!
কাঁহা করোঁ, কাহাঁ যাঙ, কাহাঁ গেলে কৃষ্ণ পাঙ, ।
কৃষ্ণ বিনা প্রাণ মোর যায়'' ॥৫৩॥

হা হা সখি, কি করি উপায়!
কাঁহা করোঁ, কাহাঁ য়াঙ; কাহাঁ গেলে কৃষ্ণ পাঙ; ।
কৃষ্ণ বিনা প্রাণ মোর য়ায়" ॥৫৩॥

হা হা—हे; **সখি**—सखियों; **কি**—क्या; **করি**—मैं करूँ; **উপায়**—उपाय; **কাঁহা করোঁ**—मैं क्या करूँ; **কাহাঁ য়াঙ**—मैं कहाँ जाऊँ; **কাহাঁ গেলে**—कहाँ जाकर; **কৃষ্ণ পাঙ**—कृष्ण को पा सकती हूँ; **কৃষ্ণ বিনা**—कृष्ण के बिना; **প্রাণ**—प्राण; **মোর**—मेरे; **য়ায়**—निकल रहे हैं।

अनुवाद

"हे प्रिय सखियों, मैं कृष्ण को कैसे पा सकूँगी? मैं क्या करूँ? मैं कहाँ जाऊँ? मैं उनसे कहाँ मिल सकती हूँ? कृष्ण के न मिलने से मेरे प्राण निकल रहे हैं।"

ক্ষণে মন স্থির হয়, তবে মনে বিচারয়,
বলিতে হ-ইল ভাবোদ্গম ।
পিঙ্গলার বচন-স্মৃতি, করাইল ভাব-মতি,
তাতে করে অর্থ-নির্ধারণ ॥৫৪॥

ক্ষণে মন স্থির হয়, তবে মনে বিচারয়,
বলিতে হ-ইল ভাবোদ্গম ।
পিঙ্গলার বচন-স্মৃতি, করাইল ভাব-মতি,
তাতে করে অর্থ-নির্ধারণ ॥৫৪॥

ক্ষণে—एक क्षण में; **মন**—मन; **স্থির হয়**—शान्त हो गया; **তবে**—उस समय; **মনে**—मन में; **বিচারয়**—वे सोचने लगे; **বলিতে**—कहने के लिए; **হ-ইল**—था; **ভাব-উদ্গম**—भाव का उदय; **পিঙ্গলার**—पिंगला के; **বচন-স্মৃতি**—शब्दों का स्मरण करके;

कराइल—किया; **भाव-मति**—मन में भाव; **ताते**—उसमें; **करे**—किया; **अर्थ-निर्धारण**—अर्थ बताने लगे।

अनुवाद

एकाएक श्री चैतन्य महाप्रभु शान्त हो गये और अपनी मनोदशा पर विचार करने लगे। उन्हें पिंगला के शब्द स्मरण हो आये और इससे उनके मन में भावावेश का उदय हुआ, जिसने उन्हें बोलने के लिए प्रेरित किया। इस तरह वे इस श्लोक का अर्थ बतलाने लगे।

तात्पर्य

पिंगला एक वेश्या थी, जिसने कहा था, "आशा न होने पर भी आशा करने से मात्र कष्ट होता है। नितान्त निराशा सबसे बड़ा सुख है।" इस कथन का स्मरण करके श्री चैतन्य महाप्रभु भावावेश में आ गये। यह पिंगला की कथा *श्रीमद्भागवत* (११.८.२२-४४) में तथा *महाभारत* (शान्ति पर्व, अध्याय १७४) में भी पाई जाती है।

''देखि एइ उपाये, कृष्ण-आशा छाड़ि' दिये,
आशा छाड़िले सुखी हय मन ।
छाड़' कृष्ण-कथा अधन्य, कह अन्य-कथा धन्य,
याते हय कृष्ण-विस्मरण'' ॥ ५५ ॥

"देखि एइ उपाये, कृष्ण-आशा छाड़ि' दिये,
आशा छाड़िले सुखी हय मन ।
छाड़' कृष्ण-कथा अधन्य, कह अन्य-कथा धन्य,
याते हय कृष्ण-विस्मरण" ॥ ५५ ॥

देखि—देखकर; **एइ उपाये**—उपाय; **कृष्ण-आशा**—कृष्ण की आशा; **छाड़ि' दिये**—मैं त्याग देता हूँ; **आशा**—आशा; **छाड़िले**—यदि मैं त्याग दूँ; **सुखी**—सुखी; **हय**—हो जाऊँगा; **मन**—मन; **छाड़'**—त्याग दो; **कृष्ण-कथा**—कृष्ण की चर्चा; **अधन्य**—अति महिमाहीन; **कह**—कहो; **अन्य-कथा**—अन्य बातें; **धन्य**—महिमामण्डित; **याते**—जिसके द्वारा; **हय**—होता है; **कृष्ण-विस्मरण**—कृष्ण का विस्मरण।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "यदि मैं कृष्ण से मिलने की आशा

त्याग दूँ, तो मैं सुखी रहूँगा। इसलिए हम कृष्ण विषयक इस अति महिमाहीन चर्चा को बन्द करें। अच्छा हो कि हम महिमामण्डित कथाओं के विषय में बातें करें और कृष्ण को भूल जायें।"

কহিতেই হ-ইল স্মৃতি, চিত্তে হৈল কৃষ্ণ-স্ফূর্তি,
সখীরে কহে হঞা বিস্মিতে ।
''যারে চাহি ছাড়িতে, সেই শুঞা আছে চিত্তে,
কোন রীতে না পারি ছাড়িতে'' ॥৫৬॥

কহিতেই হ-ইল স্মৃতি, চিত্তে হৈল কৃষ্ণ-স্ফূর্তি,
সখীরে কহে হঞা বিস্মিতে ।
"যারে চাহি ছাড়িতে, সেই শুঞা আছে চিত্তে,
কোন রীতে না পারি ছাড়িতে" ॥৫৬॥

কহিতেই—बोलते हुए; **হ-ইল**—हुआ; **স্মৃতি**—स्मरण; **চিত্তে**—हृदय में; **হৈল**—हुआ; **কৃষ্ণ-স্ফূর্তি**—कृष्ण का प्राकट्य; **সখীরে**—सखियों को; **কহে**—कहा; **হঞা বিস্মিতে**—अत्यन्त चकित होकर; **যারে**—वह जिसे; **চাহি ছাড়িতে**—मैं छोड़ना चाहती हूँ; **সেই**—वह व्यक्ति; **শুঞা আছে**—स्थित है; **চিত্তে**—हृदय में; **কোন রীতে**—किसी विधि से; **না পারি**—मैं समर्थ नहीं हूँ; **ছাড়িতে**—छोड़ने के लिए।

अनुवाद

इस तरह बोलते हुए श्रीमती राधारानी को सहसा कृष्ण का स्मरण हो आया। निस्सन्देह, वे उनके हृदय के भीतर प्रकट हुए। अत्यन्त चकित होकर उन्होंने अपनी सखियों से कहा, "मैं जिस पुरुष को भूलना चाहती हूँ, वह तो मेरे हृदय में स्थित है।"

রাধা-ভাবের স্বভাব আন, কৃষ্ণে করায় 'কাম'-জ্ঞান,
কাম-জ্ঞানে ত্রাস হৈল চিত্তে ।
কহে—''যে জগত্মারে, সে পশিল অন্তরে,
এই বৈরী না দেয় পাসরিতে'' ॥৫৭॥

রাধা-ভাবের স্বভাব আন, কৃষ্ণে করায় 'কাম'-জ্ঞান,
কাম-জ্ঞানে ত্রাস হৈল চিত্তে ।

कहे—"ग्रे जगत्मारे, से पशिल अन्तरे,
एइ वैरी ना देय पासरिते" ॥ ५७ ॥

राधा-भावेर—श्रीमती राधारानी के भाव का; **स्वभाव**—स्वभाव; **आन**—अन्य; **कृष्णे**—कृष्ण को; **कराय**—उन्हें करवाता है; **काम-ज्ञान**—कामदेव के रूप में; **काम**—कामदेव; **ज्ञाने**—का ज्ञान; **त्रास**—भय; **हैल**—हुआ; **चित्ते**—मन में; **कहे**—उन्होंने कहा; **ग्रे**—जो व्यक्ति; **जगत्**—सारा जगत्; **मारे**—जीतता है; **से**—वह व्यक्ति; **पशिल**—प्रवेश किया है; **अन्तरे**—मेरे हृदय में; **एइ वैरी**—यह शत्रु; **ना देय**—अनुमति नहीं देता; **पासरिते**—भूलने की।

अनुवाद

श्रीमती राधारानी के भाव ने उन्हें यह सोचने के लिए भी बाध्य किया कि कृष्ण कामदेव हैं और इस ज्ञान से वे भयभीत हो उठीं। उन्होंने कहा, "यह कामदेव, जिसने सारे जगत् को जीतकर मेरे हृदय में प्रवेश किया है, मेरा सबसे बड़ा शत्रु है, क्योंकि वह मुझे उन्हें भूलने की अनुमति नहीं देता।"

ঔৎসুক্যের প্রাবীণ্যে, জিতি' অন্য ভাব-সৈন্যে,
উদয় হৈল নিজ-রাজ্য-মনে ।
মনে হ-ইল লালস, না হয় আপন-বশ,
দুঃখে মনে করেন ভৎর্সনে ॥ ৫৮ ॥

औत्सुक्येर प्रावीण्ये, जिति' अन्य भाव-सैन्ये,
उदय हैल निज-राज्य-मने ।
मने ह-इल लालस, ना हय आपन-वश,
दुःखे मने करेन भर्त्सने ॥ ५८ ॥

औत्सुक्येर—उत्सुकता के; **प्रावीण्ये**—विकास के कारण; **जिति'**—जीत लिया; **अन्य**—अन्य; **भाव-सैन्ये**—भाव के सैनिक; **उदय**—उदय; **हैल**—हुई; **निज-राज्य-मने**—उनके मनोराज्य में; **मने**—मन में; **ह-इल**—थी; **लालस**—लालसा; **ना**—नहीं; **हय**—हुई; **आपन-वश**—उनके वश में; **दुःखे**—दुःखी होकर; **मने**—मन की; **करेन**—की; **भर्त्सने**—भर्त्सना।

अनुवाद

"तब महान् उत्सुकता ने भाव के अन्य सारे सैनिकों को जीत लिया और श्रीमती राधारानी के मनोराज्य में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई, जो वश में

नहीं आ रही थी। तब अत्यन्त दुःखी होकर, उन्होंने अपने ही मन की भर्त्सना की।

"मन मोर वाम-दीन, जल विना येन मीन,
कृष्ण विना क्षणे मरि' याय ।
मधुर-हास्य-वदने, मन-नेत्र-रसायने,
कृष्ण-तृष्णा द्विगुण वाड़ाय ॥५९॥

"मन मोर वाम-दीन, जल विना ग्रेन मीन,
कृष्ण विना क्षणे मरि' ग्राय ।
मधुर-हास्य-वदने, मन-नेत्र-रसायने,
कृष्ण-तृष्णा द्विगुण बाड़ाय ॥५९॥

मन मोर—मेरा मन; **वाम-दीन**—अति दीन; **जल**—जल; **विना**—के बिना; **ग्रेन**—जैसे; **मीन**—मछली; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **विना**—के बिना; **क्षणे**—क्षणभर में; **मरि' ग्राय**—मर जायेगा; **मधुर**—मधुर; **हास्य**—हँसी; **वदने**—मुख; **मन**—मन; **नेत्र**—आँखें; **रस-आयने**—अत्यन्त सुहावना; **कृष्ण-तृष्णा**—कृष्ण के लिए तृष्णा; **द्वि-गुण**—द्विगुणित; **बाड़ाय**—बढ़ती है।

अनुवाद

"यदि मैं कृष्ण के विषय में न सोचूँ, तो मेरा दीन मन क्षणभर में मर जायेगा, जिस तरह जल के बाहर आने पर मछली मर जाती है। किन्तु जब मैं कृष्ण के मधुर हास्ययुक्त मुख को देखती हूँ, तो मेरा मन तथा मेरी आँखें इतनी प्रसन्न हो जाती हैं कि उनके देखने के लिए मेरी इच्छा पुनः द्विगुणित हो जाती है।

हा हा कृष्ण प्राण-धन, हा हा पद्म-लोचन,
हा हा दिव्य सदगुण-सागर! ।
हा हा श्याम-सुन्दर, हा हा पीताम्बर-धर,
हा हा रास-विलास नागर ॥६०॥

हा हा कृष्ण प्राण-धन, हा हा पद्म-लोचन,
हा हा दिव्य सद्गुण-सागर! ।

हा हा श्याम-सुन्दर, हा हा पीताम्बर-धर,
हा हा रास-विलास नागर ॥ ६० ॥

हा हा—हाय; **कृष्ण**—हे कृष्ण; **प्राण-धन**—मेरे जीवन के निधि; **हा हा**—हाय; **पद्म-लोचन**—कमलनयन; **हा हा**—हाय; **दिव्य**—दिव्य; **सत्-गुण-सागर**—दिव्य गुणों के सागर; **हा हा**—हाय; **श्याम-सुन्दर**—श्यामसुन्दर; **हा हा**—हाय; **पीत-अम्बर-धर**—पीताम्बरधारी; **हा हा**—हाय; **रास-विलास**—रासनृत्य के; **नागर**—नायक।

अनुवाद

"हाय! मेरे जीवन की निधि कृष्ण कहाँ हैं? वे कमलनेत्र कहाँ हैं? हाय! वे समस्त दिव्य गुणों के दिव्य सागर कहाँ हैं? हाय! वे सुन्दर साँवले रंग वाले और पीताम्बर धारण किये हुए युवक कहाँ हैं? हाय! रासनृत्य के नायक कहाँ हैं?

কাহাঁ গেলে তোমা পাই, তুমি কহ,—তাহাঁ যাই'',
এত কহি' চলিলা ধাঞা ।
স্বরূপ উঠি' কোলে করি', প্রভুরে আনিল ধরি',
নিজ-স্থানে বসাইলা লৈঞা ॥ ৬১ ॥

काहाँ गेले तोमा पाइ, तुमि कह,—ताहाँ याइ",
एत कहि' चलिला धाञा ।
स्वरूप उठि' कोले करि', प्रभुरे आनिल धरि',
निज-स्थाने वसाइला लैञा ॥ ६१ ॥

काहाँ—कहाँ; **गेले**—जाकर; **तोमा**—आप; **पाइ**—मैं पाऊँ; **तुमि**—आप; **कह**—कृपया कहो; **ताहाँ**—वहाँ; **याइ**—मैं जाऊँगा; **एत कहि'**—यह कहकर; **चलिला धाञा**—दौड़ने लगे; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **उठि'**—उठकर; **कोले करि'**—अपनी गोद में लेकर; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आनिल**—वापस लाये; **धरि'**—पकड़कर; **निज-स्थाने**—अपने स्थान में; **वसाइला**—बैठ गये; **लैञा**—लेकर।

अनुवाद

"मैं कहाँ जाऊँ? मैं आपको कहाँ पा सकता हूँ? कृपया मुझे बताओ। मैं वहीं जाऊँगा।" इस तरह कहते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु दौड़ने लगे। किन्तु स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने खड़े होकर उन्हें पकड़ लिया और

अपनी गोद में उठा लिया। तब स्वरूप दामोदर उन्हें उनके स्थान पर लौटा ले आये और उन्हें बैठा दिया।

ক্ষণেকে প্রভুর বাহ্য হৈল, স্বরূপেরে আজ্ঞা দিল,
''স্বরূপ, কিছু কর মধুর গান'' ।
স্বরূপ গায় বিদ্যাপতি, গীত-গোবিন্দ-গীতি,
শুনি' প্রভুর জুড়াইল কাণ ॥৬২॥

क्षणेके प्रभुर बाह्य हैल, स्वरूपेरे आज्ञा दिल,
"स्वरूप, किछु कर मधुर गान" ।
स्वरूप गाय विद्यापति, गीत-गोविन्द-गीति,
शुनि' प्रभुर जुड़ाइल काण ॥६२॥

क्षणेके—सहसा; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **बाह्य**—बाह्य चेतना; **हैल**—हुई; **स्वरूपेरे आज्ञा दिल**—उन्होंने स्वरूप दामोदर गोस्वामी को आज्ञा दी; **स्वरूप**—हे प्रिय स्वरूप; **किछु**—कुछ; **कर**—करो; **मधुर**—मधुर; **गान**—गीत; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर; **गाय**—गाया; **विद्यापति**—विद्यापति के गीत; **गीत-गोविन्द-गीति**—*गीत-गोविन्द* के गीत; **शुनि'**—सुनकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **जुड़ाइल**—हो गये तृप्त; **काण**—कान।

अनुवाद

सहसा श्री चैतन्य महाप्रभु की बाह्यचेतना जाग्रत हुई और उन्होंने स्वरूप दामोदर गोस्वामी से कहा, "हे प्रिय स्वरूप, कोई मधुर गीत गाओ।" जब महाप्रभु ने स्वरूप दामोदर को *गीत गोविन्द* के तथा विद्यापति रचित गीत गाते सुना, तो उनके कर्ण तृप्त हो गये।

এই-মত মহাপ্রভু প্রতি-রাত্রি-দিনে ।
উন্মাদ চেষ্টিত হয় প্রলাপ-বচনে ॥৬৩॥

एइ-मत महाप्रभु प्रति-रात्रि-दिने ।
उन्माद चेष्टित हय प्रलाप-वचने ॥६३॥

एइ-मत—इस तरह; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्रति-रात्रि-दिने**—प्रत्येक दिन और रात; **उन्माद**—उन्मत्त; **चेष्टित**—कार्य; **हय**—हैं; **प्रलाप-वचने**—उन्मत्त की तरह बोलते।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु इसी तरह प्रत्येक रात और दिन उन्मत्त हो उठते और एक पागल की तरह बातें करते।

एक-दिने यत हय भावेर विकार ।
सहस्र-मुखे वर्णे यदि, नाहि पाय पार ॥६४॥
एक-दिने यत हय भावेर विकार ।
सहस्र-मुखे वर्णे यदि, नाहि पाय पार ॥ ६४॥

एक-दिने—एक दिन में; **यत हय**—जितने होते; **भावेर**—भाव; **विकार**—के विकार; **सहस्र-मुखे**—हजार मुखों वाले अनन्त देव; **वर्णे यदि**—यदि वर्णन करे; **नाहि पाय**—नहीं पहुँच सकते; **पार**—सीमा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु को एक दिन में जितने भाव-विकारों का अनुभव होता, उसका पूरा पूरा वर्णन हजार मुखों वाले अनन्तदेव भी नहीं कर सकते।

जीव दीन कि करिबे ताहार वर्णन? ।
शाखा-चन्द्र-न्याय करि' दिग्दरशन ॥६५॥
जीव दीन कि करिबे ताहार वर्णन? ।
शाखा-चन्द्र-न्याय करि' दिग्दरशन ॥ ६५॥

जीव—जीव; **दीन**—दीन; **कि**—क्या; **करिबे**—करेगा; **ताहार**—उसका; **वर्णन**—वर्णन; **शाखा-चन्द्र-न्याय**—वृक्ष की शाखाओं के बीच से चन्द्रमा को दिखाने का तर्क; **करि'**—मैं करता हूँ; **दिक्-दरशन**—दिशा का दर्शन।

अनुवाद

मुझ जैसा दीन प्राणी उन विकारों का वर्णन कैसे कर सकता है? मैं तो केवल उनका संकेत कर सकता हूँ, जिस तरह वृक्ष की शाखाओं के बीच से चन्द्रमा को दिखलाया जा रहा हो।

ইহা যেই শুনে, তার জুড়ায় মন-কাণ ।
অলৌকিক গূঢ়-প্রেম-চেষ্টা হয় জ্ঞান ॥৬৬॥

इहा येइ शुने, तार जुड़ाय मन-काण ।
अलौकिक गूढ़-प्रेम-चेष्टा हय ज्ञान ॥ ६६ ॥

इहा—यह; **येइ शुने**—जो सुनता है; **तार**—उनका; **जुड़ाय**—सन्तुष्ट होता है; **मन-काण**—मन तथा कान; **अलौकिक**—असामान्य; **गूढ़-प्रेम**—कृष्ण के लिए गहन प्रेम; **चेष्टा**—कार्य; **हय ज्ञान**—वह समझ सकता है।

अनुवाद

किन्तु यह वर्णन उस व्यक्ति के मन तथा कानों को तुष्ट करेगा, जो इसे सुनेगा और वह कृष्ण के गहन प्रेम के इन असामान्य कार्यकलापों को समझ सकेगा।

অদ্ভুত নিগূঢ় প্রেমের মাধুর্য-মহিমা ।
আপনি আস্বাদি' প্রভু দেখাইলা সীমা ॥৬৭॥

अद्भुत निगूढ़ प्रेमेर माधुर्य-महिमा ।
आपनि आस्वादि' प्रभु देखाइला सीमा ॥ ६७ ॥

अद्भुत—अद्‌भुत; **निगूढ़**—निगूढ़; **प्रेमेर**—कृष्ण के लिए; **माधुर्य-महिमा**—मधुरता की महिमा; **आपनि**—स्वयं; **आस्वादि'**—आस्वादन करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **देखाइला**—दिखाई; **सीमा**—चरम सीमा।

अनुवाद

कृष्ण के लिए प्रेमावेश अद्‌भुत तथा निगूढ़ है। उस प्रेम के महिमामय माधुर्य का स्वयं आस्वादन करके श्री चैतन्य महाप्रभु ने हमें इसकी चरम सीमा दिखलाई है।

অদ্ভুত-দয়ালু চৈতন্য—অদ্ভুত-বদান্য! ।
ঐছে দয়ালু দাতা লোকে নাহি শুনি অন্য ॥৬৮॥

अद्भुत-दयालु चैतन्य—अद्भुत-वदान्य! ।
ऐछे दयालु दाता लोके नाहि शुनि अन्य ॥ ६८ ॥

अद्भुत—अद्भुत; **दयालु**—दयालु; **चैतन्य**—चैतन्य महाप्रभु; **अद्भुत-वदान्य**—अद्भुत वदान्य; **ऐछे**—ऐसे; **दयालु**—दयालु; **दाता**—दानी; **लोके**—इस जगत् में; **नाहि**—नहीं; **शुनि**—हमने सुना है; **अन्य**—अन्य।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु अद्भुत कृपालु एवं अद्भुत वदान्य हैं। हमने इस जगत् में उन जैसे दयालु तथा दानी अन्य किसी के बारे में नहीं सुना है।

सर्व-भावे भज, लोक, चैतन्य-चरण ।
याहा हैते पाइबा कृष्ण-प्रेमामृत-धन ॥ ६९॥

सर्व-भावे भज, लोक, चैतन्य-चरण ।
याहा हैते पाइबा कृष्ण-प्रेमामृत-धन ॥ ६९॥

सर्व-भावे—सब प्रकार से; **भज**—पूजा करो; **लोक**—हे समग्र जगत्; **चैतन्य-चरण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल; **याहा हैते**—जिसके द्वारा; **पाइबा**—तुम प्राप्त करोगे; **कृष्ण-प्रेम**—कृष्ण का प्रेम; **अमृत**—अमृत का; **धन**—कोष।

अनुवाद

हे संसार के लोगों, श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की सभी प्रकार से पूजा करो। केवल इसी विधि से तुम उन्मत कृष्ण-प्रेम के अमृतमय कोष को प्राप्त कर सकोगे।

एई त' कहिलुँ 'कूर्माकृति'-अनुभाव ।
उन्माद-चेष्टित ताते उन्माद-प्रलाप ॥ ७०॥

एइ त' कहिलुँ 'कूर्माकृति'-अनुभाव ।
उन्माद-चेष्टित ताते उन्माद-प्रलाप ॥ ७०॥

एइ त' कहिलुँ—इस तरह मैंने वर्णन किया है; **कूर्म-आकृति**—कूर्म के समान बनना; **अनुभाव**—भाव का लक्षण; **उन्माद-चेष्टित**—उन्मत्त की तरह कार्य करना; **ताते**—उसमें; **उन्माद-प्रलाप**—उन्मत्त की तरह बोलना।

अनुवाद

इस तरह मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु के कूर्म जैसे बनने के विकार का वर्णन किया है। उस भाव में वे उन्मत्त की तरह बातें और कार्य करते थे।

এই লীলা স্ব-গ্রন্থে রঘুনাথ-দাস ।
গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্পবৃক্ষে কৈরাছেন প্রকাশ ॥৭১॥

এइ লীলা স্ব-গ্রন্থে রঘুনাথ-দাস ।
গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্পবৃক্ষে কৈরাছেন প্রকাশ ॥৭১॥

এइ লীলা—यह लीला; **স্ব-গ্রন্থে**—अपने ग्रन्थ में; **রঘুনাথ-দাস**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্প-বৃক্ষে**—*गौराङ्गस्तव कल्पवृक्ष* नामक; **কৈরাছেন প্রকাশ**—पूरा वर्णन किया है।

अनुवाद

श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी ने अपनी पुस्तक 'गौराङ्गस्तव कल्पवृक्ष' में इस लीला का भलीभाँति वर्णन किया है।

অনুদঘাট্য দ্বার-ত্রয়মুরু চ ভিত্তি-ত্রয়মহো
বিলঙ্ঘ্যাচ্চৈঃ কালিঙ্গিক-সুরভি-মধ্যে নিপতিতঃ ।
তনূদ্যত্সঙ্কোচাত্কমঠ ইব কৃষ্ণোরু-বিরহাদ্
বিরাজদ্গৌরাঙ্গো হৃদয় উদয়ন্মাং মদয়তি ॥৭২॥

অনুদ্ঘাট্য দ্বার-ত্রয়মুরু চ ভিত্তি-ত্রয়মহো
বিলঙ্ঘ্যোচ্চৈঃ কালিঙ্গিক-সুরভি-মধ্যে নিপতিতঃ ।
তনূদ্যত্সঙ্কোচাত্কমঠ ইব কৃষ্ণোরু-বিরহাদ্
বিরাজদ্গৌরাঙ্গো হৃদয় উদয়ন্মাং মদয়তি ॥৭২॥

অনুদ্ঘাট্য—बिना खोले; **দ্বার-ত্রয়ম্**—तीन दरवाजे; **উরু**—मजबूत; **চ**—तथा; **ভিত্তি-ত্রয়ম্**—तीन दीवारें; **অহো**—कितना अद्भुत; **বিলঙ্ঘ্য**—लाँघ करके; **উচ্চৈঃ**—बहुत ऊँची; **কালিঙ্গিক**—तैलंग जिले के कलिंग देश की; **সুরভি-মধ্যে**—गायों के बीच; **নিপতিতঃ**—गिर गये; **তনু-উদ্যত্-সঙ্কোচাত্**—शरीर के भीतर समेटकर; **কমঠঃ**—कुछुवे; **ইব**—की तरह; **কৃষ্ণ-উরু-বিরহাত্**—कृष्ण के तीव्र विरहभाव में; **বিরাজন্**—प्रकट होकर; **গৌরাঙ্গঃ**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **হৃদয়ে**—मेरे हृदय में; **উদয়ন্**—उदित होकर; **মাম্**—मुझे; **মদয়তি**—उन्मत्त बनाते हैं।

अनुवाद

"कितनी विचित्र बात है! श्री चैतन्य महाप्रभु ने तीन सुदृढ़तापूर्वक बन्द किए हुए दरवाज़ों को बिना खोले ही अपना घर छोड़ दिया। तब उन्होंने तीन ऊँची दीवालें लाँघीं और बाद में वे कृष्ण-विरह की प्रबल

अनुभूति के कारण तैलंग जिले की गौवों के बीच में गिर गये और अपने शरीर के सारे अंगों को कछुवे की तरह भीतर समेट लिया। इस तरह प्रकट होने वाले श्री चैतन्य महाप्रभु मेरे हृदय में उदित होकर मुझे उन्मत्त बनाते हैं।"

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥७३॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥७३॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—के चरणकमलों में; **यार**—जिनकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **कहे**—वर्णन करते हैं; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए तथा उनके चरणचिह्नों पर चलकर मैं कृष्णदास श्री चैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत के अन्त्य लीला के अन्तर्गत श्री चैतन्य महाप्रभु के शारीरिक विकार शीर्षक सत्रहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।